E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact - 5.675

AKSHARA

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

October 2023 Special Issue 09 Volume VI

Chief Editor

Dr. Girish S. Koli

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / October 2023 / Special Issue 09 / Vol. VI

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

October 2023

Special Issue 09 Volume VI

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.67

Scientific Journal Impact Factor

TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services

International Society for Research Activity (ISRA)
Journal-Impact-Factor (JIF)

Digital Online Identifier-Database System
(An International Digital and Virtual Library

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / October 2023 / Special Issue 09 / Vol. VI

Editorial Board

-: Chief & Executive Editor:-

Dr. Girish Shalik Koli
Dongar Kathora
Tal.Yawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301
Mobile No: 09421682612
Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

-:Co-Editors :-

- **Dr. Sirojiddin Nurmatov,** Associate Professor, Tashkent Institute Of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan
- **Dr.Vivek Mani Tripathi,** *Assistant Professor*, Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China
- **Dr.Maxim Demchenko** Associate Professor Moscow State Linguistic University, Institute Of International Relationships, Moscow,Russia
- **Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan,** Assistance Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan ,Yemen.
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** *Assistant Professor* (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- **Mr. Nilesh SamadhanGuruchal,** *Assistant Professor* (English)Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Shaikh Aafaq Anjum,** *Assistant Professor* (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- **Mr. Dipak Santosh Pawar,** *Assistant Professor* (Marathi)Dr. A.G.D. Bendale Mahila Mahavidyalya, Jalgaon [M. S.] India.

PEER REVIEW POLICY

AMRJ will send a copy of research work to the editorial board. The board will verify the same according to the rules of research methodology. Then plagiarism in the work will be checked. In case if the research methodology is not followed properly by the researcher, message will be given to the researcher and he/she will be asked to revise the work in a stipulated period.

After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee.

SINGLE BLIND PEER REVIEW BY EXPERT PEER REVIEWERS

AMRJ adopts the Single Blind Peer Review Method. After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee for review through email. AMRJ do not disclose the details of researcher to Peer Review Committee. The Peer Review Table will be displayed online according to the criteria decided by the Editorial Board. After the approval by Peer Review Committee, the research work will be published in the Issue. In case if any instructions received from Peer Review Committee, the same will be forwarded to the researcher and he/she will be asked to clear the matter. Editorial Board of AMRJ will be the final authority to decide whether a research work is to be published or not.

AMRJ Disclaimer:

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it.

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / October 2023 / Special Issue 09 / Vol. VI

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	Representation of Women In Legislatures and Local Body Representation As a Source of Political Empowerment for Women	Dr.D.S.V.S.Balasubrahmanyam	05
2	Role of North East Region of India in India's Foreign Relations	Dr. M. Esther Kalyani Asirvadam	11
3	The Impact of an open Economy and Closed Economy on International Business	Dr.Kalpana Vaidya	15
4	Analysis of India China bilateral trade relations	Abhishek Shukla Dr. Smriti Jain	23
5	A Study of Logical Reasoning of Secondary Schools Students With Reference to Certain Variables	Sanjay M. Vania Dr. J. K. Talati	28
6	Doctrine of Pleasure Under Constitution of India	Anju	31
7	Development of Right to Information	Dr. Madhukar F. Rautrahe	35
8	A Study on Banking Innovation to Improve Customer Base with Reference to ICICI Bank, Banglore	GEETHA. R	37
9	Communal Disharmony in Mahesh Dattani's Play 'Final Solutions'	Dr. Sidhartha B. Sawant	45
10	Sports Policies and Importance of Sports in Life: An Research Study	Prof. Dr. Pandurang J.Gote	50
11	Vanity and Class Discrimination in Jane Austen's classic *Emma*.	Mitalee Khivaiya Ahire	55
12	The Influence of Single Parenting on Students' Academic Performance in Secondary Schools in Ratlam City	Soniya Rai	57
13	The Role of Indian Languages, Arts and Culture to Strengthen Holistic and Multidisciplinary Education through NEP 2020	Dr.Narendra Dinkar Mahale	62
14	अभिमन्यु अनत कृत 'लाल पसीना' उपन्यास में चित्रित नारी शोषण	वि अमुधा डॉ अनुराधा पाकलापाटि	66
15	मानवीय धर्म-प्रयोजन अथवा प्रेरणा	डॉ.मंजु अरोरा	70
16	कृष्ण काव्यधारा में कृष्ण का महत्व	डॉ.डी.जयभारती	74
17	मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक जीवन का यथार्थ	हनी कुमारी वर्मा	76
18	वाल्मीकि रामायण में स्त्री-विमर्श	किरण गौड़ / डॉ. अशोक कुमार	80
19	उच्च शिक्षा की चुनौतियाँ एवं समाधान : भारत के सन्दर्भ में	डॉ. अशोक कुमार श्रीमती पिंकी सैणी	83
20	'अन्या से अनन्या' प्रभा खेतान की आत्मकथा का चिंतनात्मक अध्ययन:	डॉ. अंजीर नथ्थू भील	86

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / October 2023 / Special Issue 09 / Vol. VI

14

अभिमन्यु अनत कृत ‘लाल पसीना’ उपन्यास में चित्रित नारी शोषण

वि अमुधा
शोधार्थी ID: (UP21G9651003)
वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज ,पल्लावरम, चेन्नई

डॉ अनुराधा पाकलापाटि
शोध निर्देशिका, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज ,पल्लावरम,

---

भारतीय नारी की स्थिति :

वेदों में नारी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। स्त्री की शिक्षा, शील, गुण, कर्तव्य, अधिकार और सामाजिक भूमिका का सुन्दर दृश्य हमें वेदों से उपलब्ध है। नारी की शक्ति को खूब दर्शाती है यह कविता

“क्षीण नहीं, अबला नहीं,
ना ही वह बेचारी है,
जोश भरा लिबास पहने ,
गर्व से चलती आज की नारी है।
त्याग की सूरत, ममता की मूरत,
तो कभी देवी का प्रतिरूप कही,
जैसी जिसने माँग करी,
वह ढलती उसके स्वरूप रही। कीर्ति “[1]

यह सही है कि मध्यकालीन युग में हमारे देश में पतनशील प्रवृत्तियाँ के विकासक्रम में सामाजिक संरचना हर तरह से प्रदूषित होती गई। जिसके कारण उसका परिणाम हम आज तक भुगत रहे हैं। पाश्चात्य और अरब संस्कृति के आगमन के साथ ही हमारे संस्कृति पर दबाव बनाना प्रारंभ किया और उन्हीं कारणों से हमारे समाज में नारियों के प्रति आदर्श छिन्न-भिन्न हो गया और इन्हीं कारणों से वर्त्तमान समय में नारी का अस्तित्व प्रदूषित हो गया। भारतीय समाज में पुरुष प्रधान होने की वजह से महिलाओं को बहुत सारे अत्याचार का सामना करना पड़ा है। आमतौर पर महिलाओं को जिन समस्याओं से गुज़रना पड़ा - वे हैं - दहेज़ प्रथा, यौन उत्पीड़न, महिलाओं से लूटपाट, नाबालिग लड़कियों से राह चलते छेड़-छाड़ इत्यादि।

हिंसा का तात्पर्य है किसी को शारीरिक रूप एवं मानसिक रूप से चोट या क्षति पहुँचाना। किसी को मौखिक रूप से अपशब्द कहकर मानसिक परेशानी देना भी हिंसा का ही प्रारूप है। इससे शारीरिक चोट तो नहीं लगती परन्तु दिलो-दिमाग पर गहरा आघात ज़रूर पहुँचाता है। बलात्कार, हत्या, अपहरण आदि को अपराधिक हिंसा की श्रेणी में गिना जाता है तथा घर में दहेज़ के लिए मारना, यौन शोषण, पत्नी से मारपीट, बदसलूकी जैसी घटनाएँ घरेलू हिंसा का उदाहरण है। लड़कियों से छेड़-छाड़, पत्नी को भ्रूण-हत्या के लिए मज़बूर करना, विधवा महिला को सती प्रथा के पालन करने के लिए दबाव डालना आदि सामाजिक हिंसा के अंतर्गत आती है। ये सभी घटनाएँ महिलाओं तथा समाज के बड़े हिस्से को प्रभावित कर रहीं हैं।

अभिमन्यु अनत की उपन्यास ‘लाल पसीना’ :

मॉरिशस के यशस्वी कलाकार अभिमन्यु अनत का यह उपन्यास 'लाल पसीना' उनके लेखन में एक नए दौर की शुरुआत है। इस उपन्यास में वे देश और काल की सीमाओं में बँधी मानवीय पीड़ा को मुक्त करके साधारणीकरण की जिस उदात्त भूमि पर प्रतिष्ठित कर सके हैं वह उनके रचनाकार की ही नहीं, समूचे हिंदी साहित्य के एक उपलब्धि मानी जाएगी। मॉरिशस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित 'लाल पसीना' उपन्यास में उन भारतीय मज़दूरों के जीवन संघर्ष की कहानी है, जिन्हें चालाक फ्राँसीसी और ब्रिटिश अनिवेशवादी सोना मिलने का सपना दिखाकर मॉरिशस ले गए थे। वे भोले-भाले निरीह मज़दूर अपनी ज़रूरत की मामूली-सी चीज़ें लेकर अपने परिवारों के साथ वहाँ पहुँच गए। उन्होंने वहाँ की चट्टानों को तोड़कर समतल बनाया, और उनकी मेहनत से वह धरती रसीले और ठोस गन्ने के रूप में सचमुच सोना उगलने लगी।

‘लाल पसीना’ उपन्यास में चित्रित स्त्री शोषण :

'लाल पसीना' उपन्यास में मुख्य स्त्री पात्र हैं - पुष्पा, रेखा , हरबासिया और संध्या। पुष्पा और रेखा मुख्या स्त्री पात्र हैं और बाकी सब गौण पात्र हैं। मॉरिशस में सरदारों द्वारा इन औरतों को बहुत सारी अत्याचार को सहना पड़ा। ‘लाल पसीना’ उपन्यास में एक

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / **October 2023** / Special Issue 09 / Vol. VI

मुख्य पात्र है कुंदन। वह मॉरिशस में एक मैना को देखकर कहता है "वाह रे मेरे देश की मैना ! जहाँ तुम्हारे देश के लोग खुरी घँस-घँसकर बंजर धरती को खेतों में बदल रहे हैं, वहाँ हम भी फसलों पर उत्पात करनेवाली टिड्डियों को मिटाकर इस देश को सँवारने में अपने ढंग से सहोग दे रही हो।“[2]

महामारी की घटना :

‘लाल पसीना’ उपन्यास में अभिमन्यु अनत जी महामारी के फैलाव को दर्शाते हैं। बेबस मज़दूर लोग खूब कमाने के सपने में मॉरिशस आते हैं, पर असलियत तो कुछ और ही है। दिन रात मज़दूरी के कारण वे बहुत कमज़ोर हो चुके थे। मॉरिशस में मज़दूर लोग महामारी के कारण मरने लगे। पीड़ित लोगों को एक अलग छावनी में रखा गया, जहाँ रोज़ दस से बीस लोग मर रहे थे। इनमें बहुत औरतें भी शामिल थी। ‘लाल पसीना’ उपन्यास में अभिमन्यु अनत जी कहते हैं कि “गाड़ियों में लदी लोगों को स्मशान की ओर ले जाते थे। इन लोगों को ठीक से इलाज भी नहीं हुआ था।“[3]

औरतों का अवहेलना :

'लाल पसीना' उपन्यास में अभिमन्यु अनंत जी मॉरिशस में रहती भारतीय स्त्रियों की दयनीय दशा को खूब दर्शाया है । ये स्त्रियाँ आदमियों के सामान मज़दूरी करते हैं । फिर भी उनकी स्थिति बहुत कमज़ोर है। 'लाल पसीना' उपन्यास में सुनुआ गूँगा नमक एक मज़दूर था। एक बार जब उससे भारी टोकरी नहीं उठा सखा तो उसकी बहू उसके टोकरी को सिर पर पहुँचाने में मदद की । ऐसा करते समय उसकी मांग से थोड़ा सा सिंदूर टोकरी पर गिर पड़ा था। जब गूँगे ने टोकरी को नीचे उतारा, तो सरदार की नज़र सबसे पहले टोकरी की सिन्दूर पर पड़ी। पूछने पर गूँगे अपने बचाव के लिए कुछ न कह सका तो सरदार आपे से बाहर होकर अपने हाथ की कुदाल से उसको मार दिया। उसी क्षण सुनुआ गूँगा की मृत्यु हो गई। सरदार ने उसकी बहु को भी भला बुरा कह दिया था । इस पर एक मज़दूर ने कहा "गूँगे की मृत्यु के बाद खेत की रौनक तो जाती ही रही, साथ-साथ हमारे परिवार पर उसकी भटकती आत्मा सवार हो गई।“

गर्भवती औरत की हत्या :

स्त्रियों की दुख भरी स्थिति को दर्शाया है। जीवन के हर स्तर पर यहाँ के महिलाएँ कष्ट अनुभव कर रहे हैं गर्भवती महिला को सही पोषण भी नहीं मिलता है। मालगासी सरदार गर्भवती औरत पर भी रहम नहीं करते थे। एक गर्भवती औरत के पति से कोल्हू चलाने के बाद उसे पेड़ से लटका दिया गया था । ‘लाल पसीना’ उपन्यास में इस बात को फूलवंती नामक औरत अपनी बेटी से कहती है, “उस गर्भवती औरत ने गोरे के मुँह पर टोक दिया, इसलिए गोरे ने उस पर गोली चला दी।“[4]

शादी करने का अधिकार नहीं :

हर व्यक्ति के जीवन में शादी एक महत्त्वपूर्ण घटना है। ‘लाल पसीना’ उपन्यास में अभिमन्यु अनत इस बात पर स्पष्ट करते हैं कि मॉरिशस में कुलियों को शादी करने का कोई अधिकार नहीं था। वे अपने मालिक की सहमती पर ही विवाह कर सकते थे , साथ ही यह प्रावधान भी शुरू किया गया कि मज़दूरों के बच्चे भी मज़दूर बनेंगे। मज़दूरों को चल-अचल संपत्ति माना जा रहा था। ‘लाल पसीना’ उपन्यास में रघुसिंघ नामक एक कुली ने कतार में घूँघट में खड़ी कोसिला नामक लड़की को पाँव के केवल पातल देखकर उसे पत्नी बना लिया था। कुछ मज़दूरों को शादी सिर्फ एक स्वप्न बन जाता है। ‘लाल पसीना’ उपन्यास में अभिमन्यु अनत कहते हैं कि “इस द्वीप में हिन्दू रीति-रिवाज़ से हुआ संतू और सोमा के विवाह पहला माना जाता है।“[5]

कपड़ों का अभाव :

रोटी, कपड़ा और मकान - ये तीन चीज़ें एक मनुष्य के जीवन में अति आवश्यक है। लाल पसीना उपन्यास में अभिमन्यु अनत जी इस बात को स्पष्ट कहते हैं कि मज़दूरों को इन तीन चीज़ों के लिए ज़ूझना पड़ता है। सन 1715 में फ्रांसीसियों ने मॉरिशस द्वीप पर नियंत्रण स्थापित कर बहुत लोगों को भारत से यहाँ गन्ने के खेतों में काम करवाने के लिए लाए। मॉरिशस में रहती भारतीय लड़कियों को पहनने के लिए पर्याप्त कपडे भी नहीं थे। कभी कपडा फट जाता है तो उसे सिलकर ही काम चला लेते हैं। पूरे साल के लिए उन्हें एक जोड़ा कपडा ही मिलता है। उसे ही बार बार धोकर पहनना पड़ता है। यह बड़ी दुख की बात है कि उन्हें जीवन जीने का आवश्यक चीज़ें भी बहुत मुश्किल से मिलता है। लाल पसीना उपन्यास में अभिमन्यु अनत कहते हैं "लछमनसिंह चाहकर भी उन लड़कियों को रोक नहीं सका था। सातों लड़कियों को अपनी आँखों से उसने घसीटे जाते देखा था। उनमें से दो-तीन के आँसुओं को वह ज़रूर पोंछ सका था।“[6]

गहनें पहनने का अधिकार नहीं :आभूषण ही एक स्त्री को पूर्ण बनाती है। प्रत्येक आभूषण पहनने के पीछे एक वैज्ञानिक प्रमाण है। ‘लाल पसीना’ उपन्यास में अभिमन्यु अनत जी कहते हैं कि मॉरिशस में भारतीय स्त्रियों को गहनें पहनने का अधिकार बिलकुल नहीं है। कोई जोड़ा शादी करके भारत से आए और वह लड़की गहनें पहने हो तो पूरा गहने उतारकर सरदार के हवाले सौम्पना होगा।

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / October 2023 / Special Issue 09 / Vol. VI

महिला शक्ति पर दबाव :

'लाल पसीना' उपन्यास में अभिमन्यु अनत जी कहते हैं कि मॉरिशस में रहती भारतीय स्त्रियाँ जब सरदार के विरुद्ध आंदोलन करते हैं तो उन्हें तुरंत दबा दिया जाता था। एक बार वहाँ के भारतीय महिला रेखा उसके घर के आँगन के पेड़ के नीचे स्थान को लीपकर एक छोटी सी लाल झंडी फहरा रही थी तब सरदार ने उसको इस बात पर धमकी दी।

लड़कियों का उत्पीड़न :

'लाल पसीना' उपन्यास में अभिमन्यु अनत जी कहते हैं कि मॉरिशस में रहती भारतीय स्त्रियों को सरदार द्वारा हर तरह की शोष सहना पड़ा। अगर कोई लड़की सरदार को पसंद आए तो तुरंत उसको उठा लेते थे। अगर वह लड़की शादीशुदा हो तो भी यह अत्याचार होता था। 'लाल पसीना' उपन्यास में अभिमन्यु अनत जी कहते हैं कि "एक बार एक मज़दूर मन्नू की पत्नी पर साहिब की आँखें थी क्योंकि उसकी पत्नी बस्ती की सबसे सुन्दर स्त्री थी।"[7] सब मज़दूर लाचार थे क्योंकि कोई भी इस अत्याचार के खिलाफ़ आवाज़ नहीं उठा सकता था।

स्त्री बलात्कार :

'लाल पसीना' उपन्यास में एक मुख्य स्त्री पात्र है - रेखा। वह भारतीय मज़दूर नंदू की बेटी है। एक रात नंदू की बेटी रेखा को कोठी में जाने की बारी थी। नंदू अपनी बेटी को भेजना नहीं चाहता था। एक नंदू ने कोठी के मुखिया लछमन सिंह के घर जाकर कहा "लछमन भैया ! हम अपने बच्चों के खातिर कफ़न न ले जायती न जास्ती अच्छा रहत"।[8] नंदू की पत्नी मरे अभी छह महीना भी नहीं हुआ था। उसके शोक में नंदू खेतों में काम करते-करते बेहोश हो गया था। सरदारों ने उसकी बेहोशी को स्वाँग बताकर उसे उठाकर मुंडेर पर ढकेल दिया। इसके कारण उसका एक पैर टूट जाता है। जब नंदू एक पैर से काम करता है उसे नौकरी से निकल दिया था। कई दिन उसके घर चूल्हा नहीं जला था। कुछ लड़कियों ने कोठी में उनके साथ बलात्कार होने के कारण आत्महत्या कर ली। दो और लड़कियों ने नदी की बहती धारा के साथ बह जाने दिया था। नंदू की पत्नी पर भी साहिब की आँखें थीं। उसकी पत्नी बस्ती के सुन्दर स्त्री थी। जितनी सुन्दर थी, उतनी ही साहसी भी थी। पूरी निर्भयता से उसने साहिब की पहली हरकत पर उसे अपनी ओर ताकने से हमेशा के लिए रोक दिया था। जिस समय मुखिया लछमन सिंह के साथ किसान नंदू के घर पहुँचा, तब नंदू और उसकी बेटी रेखा दोनों एक दूसरे से लिपटे रो रहे थे। नंदू ने लछमन सिंह से आग्रह किया कि वह अपने साथ रेखा को ले जाए ताकि रेखा सरदार की आँखों से बच जाए। नंदू ने रेखा को लछमन सिंह के हवाले कर दिया। लछमन सिंह अपने घर आकर रेखा को किसान के हवाले कर दिया और रेखा को किसान की बस्ती में ले जाने का अनुरोध करता है।

'लाल पसीना' उपन्यास में चित्रित अन्य स्त्री पात्र :

'लाल पसीना' उपन्यास में सभी स्त्री पत्रों ने शोषण अनुभव किए थे। पर कुछ स्त्री पात्र ऐसे भी हैं जो हर वक्त मौज-मस्ती में डूबे रहते और भारतीय मज़दूरों को दुरुपयोग भी किए थे। मॉरिशस के सरदार फिलिप की पत्नी थे आंद्रेजा। वह भारतीय मज़दूर विवेक के साथ नाजायज़ संबंध बनाती है। दोनों हमेशा गांजे के नशे में डूबे रहते थे। विवेक, जो सीता के साथ शादी होने के बावजूद भी आंद्रेजा के साथ संबंध रखता है। विवेक सीता के मनोभावों को बिलकुल कदर नहीं करता है। विवेक अपने घर की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आंद्रेजा के साथ संबंध रखता है।

निष्कर्ष :

आधुनिक युग के इस दौर में भी स्त्रियों की स्थिति में कोई अपेक्षित सुधार नहीं हुआ है। उसे समाज में दुसरे दर्जे का नागरिक बना कर रखा गया है। समानता के इस युग में स्त्री-पुरुष की साँझा संस्कृति के निर्माण की आवश्यकता है, यही वह बिंदु है, जहाँ नारी-मुक्ति का सवाल प्रारम्भ होता है। पुरुष समाज ने नारी को वस्तु और जाति मानकर एकांगी दृष्टिकोण से काम लिया है। नारी पुरुष समाज से अलग कोई वस्तु नहीं है। 'पुरुष' मानव समाज के बीच रहकर स्वतन्त्र है। उसका अपना अस्तित्व है। कहा जाता है कि नारी का भी व्यक्तित्व पुरुष से सम्बंधित होकर पूर्णता को प्राप्त करता है। इसे मात्र भ्रान्ति ही कहा जा सकता है। नारी का व्यक्तित्व मनःस्थिति और भावनाओं के बल पर उभर कर आता है। नारी का भी अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व है, वह किसी कपोल कल्पना द्वारा निर्मित नहीं की गई। नारी को या तो देवी का रूप दे दिया जाता है या फिर दासी। लेकिन वह है तो मनुष्य ही। वह चाहती है कि ये समाज उसे नारी के रूप में न देखकर एक मनुष्य समझे।

महिलाओं के प्रति होती हिंसा हो रहा है, आज भी तो ये चिंताजनक विषय बन चुका है। नारियों पर हिंसा से निपटना समाज सेवकों के लिए एक बड़ी ज़िम्मेदारी भी है। इसके साथ-साथ महिलाओं को ज़रुरत है कि वे खुद दूसरों पर निर्भर न रहकर अपनी ज़िम्मेदारी खुद को तथा अपने अधिकारों, सुविधाओं के प्रति जागरूक हो।

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / **SJIF Impact- 5.67 / October 2023 /** Special Issue 09 / Vol. VI

सन्दर्भ ग्रंथसूची

1. www.hindipoem.org
2. लाल पसीना, अभिमन्यु अनत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. सं.27
3. पूर्ववत् पृ.सं.45
4. पूर्ववत् पृ.सं.50
5. पूर्ववत् पृ.सं.51
6. पूर्ववत् पृ.सं.127
7. पूर्ववत् पृ.सं.127
8. पूर्ववत् पृ.सं.127